

रूढ़ियों से मुक्त होता गांव



पुस्तक
शुद्धि
लेखक
वन्दना वादव
प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
मूल्य : ₹ 360

मनोज मोहन

वन्दना वादव ऐसी साहित्यकार हैं, जो उपन्यास के साथ-साथ कविताएँ भी लिखती रही हैं, साथ ही बच्चों के लिए भी काफी लिखा है। वो खुद मोटिवेशनल स्पीकर, एंकर और समाज सेविका की भूमिका में सकारात्मक ऊर्जा से हमारा आसपास ऊर्जस्वित कर रही हैं। 'शुद्धि' उपन्यास 'कितने मोर्चे' के बाद इनका दूसरा उपन्यास है। राजस्थान के सीमावर्ती शहर बीकानेर से सटे गाँव उदयरामसर में क्यों से अलग-अलग जगहों पर रह रहे परिवार के सभी सदस्य दो मौतों का वजह से एक जगह इकट्ठे होते हैं। कम समय में ज्यादा से ज्यादा साथ रहने की इच्छा सबके भीतर होती है। उसी समय स्थिति अचानक पलट जाती है, जब परिवार में तीसरी मौत हो जाती है। हालात बदल जाते हैं। नये हालात में साथ रहने वाले दिनों की संख्या लगातार बढ़ती जाती है, और कामकाजी लोगों की परेशानियाँ गहरी होती जाती हैं।

सोलह सनातन संस्कारों में से अंतिम मृत्यु संस्कार है। अंत्येष्टि संस्कार की सनातनता की भयावहता को हमारा समाज जिस तरीके से झेलता है, शुद्धि उपन्यास में उसे केंद्र में रखा गया है। अमूमन उपन्यास के साथ कोई भूमिका या प्राक्कथन नहीं होता, लेकिन शुद्धि उपन्यास के प्राक्कथन में वंदना साफ-साफ कहती हैं कि इतिहास की सीढ़ियाँ चढ़कर हम वर्तमान की जमीन पर खड़े हैं। यहाँ भी बीता समय परंपराओं के रूप में हमारे साथ चल रहा है। समय के बदलाव के बीच जो संस्कार इक्कोसर्वो सदी तक किसी-न-किसी रूप में देश के अलग-अलग हिस्सों में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं, उनकी नींव समाज में कितनी गहरी है, यह समझना

आसान बेशक न हो, पर मुश्किल तो बिल्कुल नहीं है।

कन्नड़ लेखक अनंतमूर्ति भारतीय ज्ञानपीठ से सम्मानित लेखक हैं, उन्होंने अपने उपन्यास संस्कार में ब्राह्मणवाद, अंधविश्वास और रूढ़िगत मान्यताओं पर जितनी तीक्ष्णता के साथ चोट की है, उस तीक्ष्णता की धार को वंदना वादव ने अपनी व्यंग्यात्मक शैली से अपदस्थ कर दिया है। इस कारण इस उपन्यास की पठनीयता बढ़ जाती है, और पाठक में एक आत्मसुधार का भाव जागता है। लेखिका भी मानती हैं कि हमारी सनातनता की परंपरा लोककथाओं में जीवित रहती हैं। और ये लोककथाएँ जब तक एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जाती रहेंगी तब तक रिश्ते और रिश्तों को पहचान देने वाली परंपराएँ और मान्यताएँ हमारे मानस से जुदा न हो सकेंगी।

इस उपन्यास की शुरुआत परिवार के मुख्य सदस्य शेर सिंह की मृत्यु से होती है। पंडित जी के कहे अनुसार मृत व्यक्ति को आत्मा, शुद्धि संस्कार के समाप्त होने तक घर में रहने वाली है। बस वहीं से शुरू होता है उपन्यास का ताना-बाना... जहाँ मृतक शेर सिंह की पत्नी अपने पति की आत्मा के जरिये घर-परिवार के लोगों के बदलते व्यवहार और यहाँ तक अपनी संतानों के असली चेहरों को भी देख पाती है। पहली मौत के सात दिनों के भीतर ही शेर सिंह के भाई लाल सिंह की मौत हो जाती है। इसके बाद हालात तेजी से बदलते हैं। दोनों भाइयों के बेटों और शादीशुदा पोतों के परिवार एक छत के नीचे, आकर रहने की मजबूर हो जाते हैं। इसी बीच हालात तब और पेचीदा हो जाते हैं, जब घर के सबसे महत्वपूर्ण बेटे पुष्कर की मौत एक दुर्घटना में हो जाती है। उसकी मृत देह के साथ उसकी लिव-इन-पार्टनर सुगंध भी गाँव में पहुँच जाती है। और, वह पुष्कर की छती पर अपने मुहाने के सारे चिह्न समर्पित कर जाती है, जबकि उसकी व्याहता पत्नी सीमा अर्चाभित मनःस्थिति में ऐसा करती है।

उपन्यास का एक बहुत ही संक्षिप्त अंश समाज के वास्तविक यथार्थ का दृश्य पाठकों के सामने रख जाता है। वे सभी रिश्तेदार जो कभी एक साथ रहने को तरसते थे इस समय साथ रहते हुए रिश्तों से उनका मोहभंग हो जाता है, घर के बड़े बेटे-बहू का बदलता व्यवहार, जमीन-जायदाद और पैसे के लालच के बीच युवाओं की सोच के साथ घर की स्थितियाँ लगातार बदलती दिखाई देती हैं। व्यंग्यात्मक शैली में लिखे अपने उपन्यास में लेखिका ने सभी पात्रों की मनःस्थिति का प्रसंगानुकूल वर्णन किया है। यह उपन्यास तेजी से शहरीकरण के चपेट में आते जा रहे गाँव का कहानी है। समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियाँ शहरीकरण के दबाव में टूट रही हैं। यह लेखिका और आज के समाज दोनों के लिए अभीष्ट है।